श्रीरामलला मन से मंदिर तक

अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष के 500 वर्षों के
इतिहास पर अबतक की गहन शोध, प्रभु श्रीराम तथा भगवती सीताजी
के मानव कल्याण संदेशों पर आधारित 1108 पृष्ठों का ग्रंथ

प्रभु श्रीराम मंदिर के लिए 500 वर्षों के संघर्ष तथा भगवान के मानव-कल्याण संदेशों पर आधारित ग्रंथ

श्रीरामलला : मन से मंदिर तक

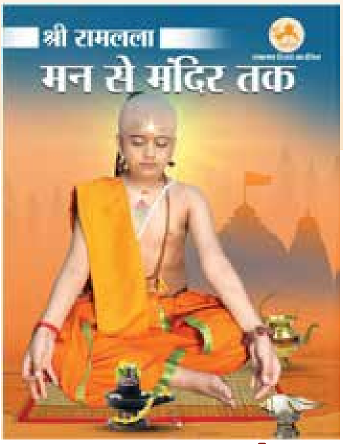

पुस्तक ग्रंथ

'रामायण रिसर्च काउंसिल' प्रभु श्रीराम मंदिर के लिए 500 वर्षों के संघर्ष पर आधारित पुस्तक-ग्रंथ को तैयार कर रहा है। इस पुस्तक-ग्रंथ में 21 लेखक होंगे तो वहीं लेखक-मंडल के अलावा रुद्राक्ष की 108 माला की तरह सहयोग देने वाले 108 प्रभु-भक्तों के नामों को इस पुस्तक में प्रमुख सहयोगी के रूप में शामिल किया जा रहा है। यह आने वाली पीढ़ी के लिए शोध का विषय बने, इसके लिए प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष के अलावा यह राष्ट्र मंदिर कैसे है और प्रभु के मानव कल्याण संदेश क्या हैं, माता जानकी जी के जीवन आदर्श समेत वह कैसे महिला सशक्तीकरण के लिए ज्वलंत उदाहरण हैं, हर एक विषय की व्याख्या की गई है। वहीं कुछ प्रमुख भारतीय भाषाओं में श्रीरामकथा, अयोध्या के 148 मंदिरों की चर्चा, आने वाली युवा पीढ़ी को प्रभु श्रीराम कथावाचक कैसे बनाया जाए... कई विषयों को विस्तार से संकलित कर एक समाधान देने की कोशिश की गई है।

क्यों है ऐतिहासिक ?

- 1108 पृष्ठों की है पुस्तक
- हिन्दी के अलावा भारत के सभी प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं तथा 21 अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद
- 21 देशों में ग्रंथ के विमोचन के साथ संयुक्त राष्ट्र के सभी मान्य देशों में डिजिटल रूप से प्रसार का संकल्प

शुरूआत में इन भाषाओं में अनुवाद:

English, Khmer, Indonesian, Spanish, Guyana, Fijian, Russian, German, Japanese, Korean, Malay, Thai

शुरूआत में इन देशों में प्रसार का संकल्प:

India, Combodia, Indonedia, West Indies, Trinidad & Tobago, Guyana, Fiji, Russia, France, Japan, Korea, Malaysia, Thailand, US, UK, Germany, Spain, Canada, Nepal, Saudi Arabia, Australia, Bangladesh

क्यों खास है पुस्तक का विषय

पुस्तक में अयोध्या की पौराणिक महत्ता से लेकर प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष पर आधारित, कानून, राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक पक्ष के साथ श्रीभगवती सीताजी और प्रभु श्रीराम तथा श्रीरामचरितमानस के मानव कल्याण संदेशों को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ अयोध्या की प्राचीन लोक-संस्कृति, श्रीरामायण और विज्ञान में संबंध, भारतीय भाषाओं में श्रीरामकथा, अयोध्या के दर्जनों मंदिरों की चर्चा समेत कई विषयों को संकलित एवं शोधपरक बनाया गया है।

दैनिक जागरण

श्रीराम मंदिर संघर्ष पर लिखी पुस्तक को लेकर पीएम से मिले भागलपुर के सुशांत

प्रयास

- पुस्तक का 10 अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में हो रहा अनुवाद
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पुस्तक के लेखन-कार्य की सराहना की

कौन हैं कुमार सुशांत

कुमार सुशांत भागलपुर जिले के रहने वाले हैं। रंगरा गांव के मूल निवासी सुशांत केंद्र सरकार में मीडिया सलाहकार भी रहे हैं।

जागरण संवाददाता, भागलपुर : अयोध्या में श्रीराम मंदिर संघर्ष पर आधारित गहन शोध व सबसे अधिक पृष्ठों की पुस्तक का लेखन-कार्य किया जा रहा है। इस पुस्तक के लेखक केंद्र सरकार के पूर्व मीडिया सलाहकार कुमार सुशांत व रक्षा एवं पर्यटन राज्यमंत्री अजय भट्ट हैं। पुस्तक का हिंदी के अलावा 10 अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद हो रहा है। इसका 21 देशों में विमोचन किया जाना है। इसी विषय को लेकर मंगलवार को केंद्रीय राज्यमंत्री अजय भट्ट एवं कुमार सुशांत प्रधानमंत्री से मिले। प्रधानमंत्री ने इस ऐतिहासिक पुस्तक के लेखन-कार्य की सराहना करते हुए कहा कि यह काफी अच्छा प्रयास है। उन्होंने इस विषय पर अपना मार्गदर्शन भी दिया।

इसकी जानकारी केंद्रीय राज्यमंत्री अजय भट्ट ने दी। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में अयोध्या में श्रीराम मंदिर संघर्ष के अलावा भारतीय भाषाओं में रामकथा समेत भगवान राम, मां सीता तथा प्रभु के मानव कल्याण संदेशों पर आधारित आलेखों को विशेष तौर पर संग्रहित किया जा रहा है। इस पुस्तक में करीब एक हजार पृष्ठों के संकलन का कार्य लगभग संपूर्ण हो चुका है। शेष 108 पृष्ठ पर कार्य भी तेज गति से चल रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिले मार्गदर्शन के बाद इस पुस्तक को एक नई दिशा मिलेगी।

नई दिल्ली में प्रधानमंत्री को पुस्तक भेंट करते कुमार सुशांत • जागरण

श्रीराम मंदिर संघर्ष पर पुस्तक को लेकर पीएम से मिले भट्ट

राज्य ब्यूरो, देहरादून: अयोध्या में श्रीराम मंदिर संघर्ष पर आधारित पुस्तक 'श्री रामलला मन से मंदिर तक' के सिलसिले में केंद्रीय राज्यमंत्री अजय भट्ट ने अपने साथी लेखक कुमार सुशांत के साथ दिल्ली में प्रधानमंत्री से मुलाकात की। उन्होंने प्रधानमंत्री को अवगत कराया कि इस पुस्तक का हिंदी के अलावा 10 अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में भी अनुवाद हो रहा है। 21 देशों में इसका विमोचन होगा। केंद्रीय राज्यमंत्री भट्ट ने बताया कि पुस्तक में अयोध्या में श्रीराम मंदिर संघर्ष के अलावा भारतीय भाषाओं में रामकथा समेत भगवान राम, मां सीता और भगवान राम के मानव कल्याण संदेशों पर आधारित आलेखों को विशेष तौर पर संग्रहित किया गया है। करीब एक हजार पृष्ठों के संकलन का कार्य पूर्ण हो चुका है।

हिन्दुस्तान

राममंदिर संघर्ष पर लिखी पुस्तक को लेकर पीएम मोदी से मिले भट्ट

मुलाकात

हल्द्वानी | मुख्य संवाददाता

अयोध्या में राम मंदिर संघर्ष पर आधारित सबसे अधिक पृष्ठों की पुस्तक का लेखन-कार्य किया जा रहा है। इसके लेखक भारत सरकार में रक्षा एवं पर्यटन राज्य मंत्री अजय भट्ट और कुमार सुशांत हैं। इस पुस्तक का हिन्दी के अलावा 10 अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद हो रहा है। इसका 21 देशों में विमोचन किया जाएगा।

मंगलवार को केंद्रीय राज्य मंत्री अजय भट्ट और कुमार सुशांत पीएम मोदी से मिले। इस दौरान पीएम ने इस ऐतिहासिक पुस्तक के लेखन-कार्य की सराहना कर मार्गदर्शन दिया। भट्ट ने कहा कि इस पुस्तक में अयोध्या में श्रीराम मंदिर संघर्ष के अलावा भारतीय भाषाओं में रामकथा ... पर आधारित आलेखों को विशेष तौर पर संगृहीत किया जा रहा है। पुस्तक में करीब एक हजार पृष्ठों के संकलन का कार्य संपूर्ण हो चुका है। शेष पर कार्य चल रहा है। उन्होंने बताया कि इस पुस्तक को 'रामायण रिसर्च काउंसिल' (ट्रस्ट) के तौर पर प्रकाशित किया जाएगा।

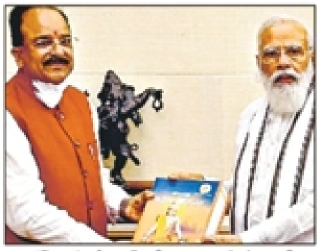

राममंदिर संघर्ष पर लिखी पुस्तक को लेकर पीएम नरेंद्र मोदी से मिले केन्द्रीय मंत्री अजय भट्ट।

राम मंदिर आंदोलन पर किताब लिख रहे भट्ट

देहरादून | विशेष संवाददाता

नैनीताल सांसद और केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री अजय भट्ट अयोध्या में बनाए जा रहे राम मंदिर के आंदोलन पर किताब लिख रहे हैं। मंगलवार को उन्होंने इस किताब के बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से चर्चा की।

अजय भट्ट ने बताया कि इस पुस्तक में राम मंदिर निर्माण आंदोलन से जुड़े सभी तथ्यों को शामिल किया कर इस पुस्तक को तैयार किया जा रहा है। यह एक तरह का रिसर्च कार्य है जो आने वाले समय में लोगों के लिए एक दस्तावेज साबित होगा।

सह लेखक कुमार सुशांत ने बताया कि यह पुस्तक राम मंदिर आंदोलन पर लिखी जाने वाली सबसे अधिक पेज की पुस्तक होगी। इस किताब का अनुवाद 10 भाषाओं में होगा और दुनिया के 21 देशों में इसका विमोचन करने का कार्यक्रम है। उन्होंने बताया कि पुस्तक

अमर उजाला

21 देशों में होगा पुस्तक का विमोचन : भट्ट

श्रीराम मंदिर संघर्ष पर सबसे बड़ी पुस्तक को लेकर पीएम से मिले रक्षा राज्यमंत्री भट्ट व लेखक सुशांत

देहरादून। केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट और केंद्र सरकार में लेखक कुमार सुशांत ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान भट्ट ने अयोध्या में श्रीराम मंदिर संघर्ष पर आधारित शोध एवं पुस्तक लेखन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रधानमंत्री को बताया कि श्रीराम मंदिर संघर्ष पर आधारित यह सबसे अधिक पृष्ठों की पुस्तक होगी।

इस पुस्तक का हिंदी के अलावा 10 अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद हो रहा है। इसका 21 देशों में विमोचन किया जाना है। बकौल अजय भट्ट, प्रधानमंत्री ने इस ऐतिहासिक पुस्तक के लेखन कार्य की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह काफी अच्छा प्रयास है। उन्होंने इस विषय पर मार्गदर्शन भी दिया।

भट्ट ने कहा कि इस पुस्तक में अयोध्या में श्रीराम मंदिर संघर्ष के अलावा भारतीय भाषाओं में रामकथा समेत भगवान राम, मां सीता तथा प्रभु के मानव कल्याण संदेशों पर आधारित आलेखों को विशेष तौर पर संग्रहित किया जा रहा है। पुस्तक में करीब एक हजार पृष्ठों के संकलन का कार्य लगभग संपूर्ण हो चुका है। शेष 108 पृष्ठ पर कार्य भी तेज गति से चल रहा है। पीएम से मिले मर्गदर्शन के बाद इस पुस्तक को एक नई दिशा मिलेगी।

कुमार सुशांत ने बताया कि पुस्तक में अयोध्या की पौराणिक महत्ता, श्रीराम मंदिर संघर्ष की गाथा, व्यापक शोध संबंधित तथ्य व कानूनी प्रक्रिया, भगवान के मानव-कल्याण संदेश के साथ आने वाली युवा पीढ़ी को इससे प्रेरणा तथा पुस्तक में जाने-माने संत, समाजसेवी, श्रीराम मंदिर संघर्ष में योगदान देनेवाले राजनीतिक या गैर-राजनीतिक दल या व्यक्ति विशेष तथा प्रभु श्रीराम में अटूट आस्था व इस दिशा में सतत कार्य करने वाले महानुभावों के आलेखों को संग्रहित किया जा रहा है। पुस्तक के एक आलेख में 'प्रधानमंत्री मोदी का संकल्प' के विषय को विस्तार से समझाया। ब्यूरो

...की (हरिद्वार)
...31.08.2021

ग्रंथ "श्रीरामलला मन से मंदिर तक" की प्रस्तावना

प्रभु श्रीरामलला के जन्मस्थान पर मंदिर निर्माण के लिए संघर्ष पर आधारित बहुत सी पुस्तकें लिखी गई हैं और इससे संबंधित कई खंडित रिपोर्ट्स पूर्व से ही इंटरनेट पर यत्र-तत्र हैं... तो फिर सवाल यह है कि इस पुस्तक की आवश्यकता क्यों ? दरअसल, पूर्व में लिखी गईं पुस्तकों में विषय से संबंधित तथ्य कम और तत्कालीन सरकारों को निष्पक्ष प्रस्तुत करने के लिए दिग्भ्रमण अधिक देखा जाता है, तो कहीं कई सारे विषयों से विषयांतर होते भी देखा गया। कुछ गिनी-चुनी अच्छी पुस्तकें भी आईं हैं।

अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर निर्माण पर फैसला 9 नवंबर 2019 को आया और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों 5 अगस्त 2020 को प्रभु श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए भूमि-पूजन का पावन-कार्य संपन्न हुआ। इसे ज्यादा समय नहीं हुआ है और इस दौरान जो भी पुस्तकें, रिपोर्ट्स या इंटरनेट पर जानकारी आईं हैं, वे या तो खंडों में हैं, या किसी खास विषय-वस्तु पर आधारित है।

ह्यरामायण रिसर्च काउंसिलह्न का मानना है कि यह पुनीत कार्य पूरे सनातन परिवार तथा संस्कृति के लिए इस सदी का सबसे बड़ा उत्सव था, जिसका साक्षी पूरा विश्व बना। ऐसे में अपने गुरु, भगवती सीता और प्रभु श्रीराम के आशीर्वाद से पुस्तक-ग्रंथ ₹श्रीरामलला- मन से मंदिर तक₹ को जनमानस में व्यापक-स्तर पर लाने की तैयारी की जा रही है।

हम इस पुस्तक-ग्रंथ को अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष पर आधारित अब तक की सबसे बड़ी पुस्तक इसलिए कह रहे हैं, क्योंकि यह कुल 1108 पृष्ठों की है और हिन्दी के अलावा 10 अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जा रहा है। संबंधित भाषा वाले पुस्तक (ग्रंथ) का 21 देशों में प्रसार किया जाना है तथा यूएन के सभी मान्यदेशों में डिजिटल रूप से प्रसार किया जाएगा।

पुस्तक-ग्रंथ के विषय-वस्तु पर संक्षिप्त चर्चा करें तो हमने अयोध्या की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि से लेकर ऐतिहासिक तथ्यों और विवाद से लेकर माननीय सुप्रीम कोर्ट के फैसले तक और फिर इस निर्णय के बाद विश्व स्तर पर इसके स्वागत तक पर खास ध्यान केंद्रित किया है। वहीं, गहन शोध के साथ बहुत से विषयों को एकत्रित कर विद्वानों, संतों के विचार एवं शोधपूर्ण आलेख, कई पुस्तकालयों से संकलन तथा मंदिर निर्माण हेतु संघर्ष काल के नायकों के अनुभवों को संकलित करने का कार्य किया है।

इस पुस्तक की आवश्यकता इसलिए भी महत्व रखती है, क्योंकि इंटरनेट की दुनिया आज प्राथमिक जरूरतों में शामिल हो चुकी है और जिस गूगल सर्च-इंजन पर हम इंटरनेट के माध्यम से कोई विषय खोज करते हैं, वह हमारे देश का नहीं है। द्वितीय पहलू यह है कि पुस्तकें तो कई सारी हैं, लेकिन विभिन्न विषयों पर विभक्त हैं। ऐसे में, सदियों, शताब्दियों या सहस्राब्दियों बाद भी अगर कोई सनातन के ध्वज को थामने वाला पुरोधा इस विषय पर अनुसंधान करे... तो उसे सत्य की परिधि में संकलित और संदर्भित सारे तथ्य समेत कई तत्कालीन विद्वानों के शोध या आलेख एक जगहउपलब्ध हो जाएं और विश्व के लोगों को यह मालूम हो जाए कि कैसे 500 वर्षों के लंबे संघर्षकाल के बाद 20वीं शताब्दी में नरेंद्र दामोदर दास मोदी जैसे प्रभावशाली व्यक्तित्व को वर्ष 2014 में देश का नेतृत्व मिला। उन्होंने अपने पहले कार्यकाल में कई ऐतिहासिक कार्यों के साथ अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए अदालत में श्रीरामलला का पक्ष साक्ष्यपरक रूप से मजबूती के साथ रखा और आखिरकार सुप्रीम कोर्ट का श्रीरामलला के पक्ष में निर्णय आया और अपने दूसरे कार्यकाल के एक वर्ष बाद ही प्रभु के भव्य मंदिर निर्माण के लिए भूमि-पूजन का कार्य संपन्न किया... और इस तरह एक गंभीर विषय पर पूर्ण-विराम लग गया।

पुस्तक के विषय-वस्तु पर थोड़ी और गहराई से प्रकाश डालें तो ₹अयोध्या का अध्यात्म से नाता₹ विषय से हमने इसकी शुरूआत की है। पवित्र रामायण और रामचरितमानस के अलावा पुराणों और वेदों में अयोध्या जी और कौशल जी के वर्णन को संदर्भ सहित उल्लेख करने का प्रयत्न किया है, ताकि आने वाली पीढ़ियां अयोध्या की आध्यात्मिक गरिमा को गौरव के साथ सम ा सकें। इक्ष्वाकु वंश तथा सूर्यवंश के बाद अयोध्या में सर्वधर्म सम्भाव, राजा विक्रमादित्य के द्वारा मंदिर-निर्माण,मुगलों के अत्याचार और फिर अंग्रेजों के दमन के दौरान की अयोध्या, हमारी आस्था के साथ खिलवाड़, विवाद की शुरूआत एवं श्रीरामलला के मंदिर निर्माण के लिए संघर्ष को चरणबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

अदालत में गंभीरतापूर्ण सुनवाई व वर्ष 2019 में पांच जजों की पीठ द्वारा 40 दिनों तक लगातार इस मामले की सुनवाई को विशेष तरीके से दिनवार प्रस्तुत किया गया है, ताकि सहस्राब्दियों बाद भी मा. सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर कोई ूठ की परत न चढ़ाई जा सके। फैसले के बाद विश्वभर में सनातनी उत्साह, मीडिया की सकारात्मक खबरें एवं मा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों ऐतिहासिक भूमि-पूजन और फिर अयोध्या में प्रभु के भव्य मंदिर निर्माण हेतु निधि समर्पण अभियान के साथ इस संघर्ष के साक्षी रहे कई सज्जनों एवं संतों का भावपूर्ण आलेख, अयोध्या में सर्वधर्म सम्भाव, इस भाव को स्थापित करने वाले 148 मंदिरों का विवरण, भगवान श्रीराम से संबंधित कई ऐसी भ्रांतियां जो समाज में विष की तरह घोल दी गई है, उन अधिकांश विषयों पर संतों के आलेख के अलावा दर्जनों ऐसे धार्मिक, सामाजिक तथा तथ्यपरक विचार आमंत्रित कर संकलित किए गए हैं जो सहस्राब्दियों बाद भी एक प्रमुख संदर्भ का कार्य कर सकते हैं।

इसके अलावा इस पुस्तक-ग्रंथ में कई भारतीय भाषाओं में रामायण के वर्णन को सम्मिलित किया गया है। भगवती सीताजी के जीवनकाल (जिसका वर्णन बहुत अधिक नहीं मिलता) पर भी बहुत सारी ज्ञानवर्धक विषयक सामग्री यहां प्राप्त हो सकती है। वहीं, भगवान के विवाह-उत्सव के दौरान की ालक को शब्दों के माध्यम से आप अनुभूति कर सकते हैं, प्रभुश्रीरामजी के आदर्श जीवन-दर्शन की सुंदर ालक भी यहां से आप जान सकते हैं। साथ ही अयोध्या की लोककला, संस्कृति एवं वैभव की पौराणिक तथा ऐतिहासिक गाथा का उल्लेख करते हुए वर्तमान में कैसे उसी गौरव को वापस लौटाने की पहल की जा रही है, इस पर विस्तृत आलेख को प्रस्तुत किया जा रहा है। कोई कथावाचक या आध्यात्मिक वक्ता बनना चाहे तो यहां 10 खण्डों में विस्तृत-विषय को प्रस्तुत किया गया है।

सबसे प्रमुख कि हम इस पुस्तक-ग्रंथ ₹श्रीरामलला- मन से मंदिर तक₹ को हिन्दी के अलावा 10 अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद कर रहे हैं क्योंकि भारत के आलावा 21 देशों में हमें इसका विमोचन करना है और संयुक्त राष्ट्र के सभी मान्य देशों में डिजिटल रूप से इसका प्रसार करना है। विदित है कि नेपाल, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, श्रीलंका, मलेशिया, सिंगापुर, संयुक्त राज्य, म्यांमार, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे देशों में सनातन को मानने वाले हमारे अपने लोग अधिकाधिक हैं। वियतनाम जैसे कई देश हैं जहां अब सनातन धर्म को पढ़ा जाता है और उसे जानने की कोशिश भी की जाती है। ऐसे में भगवान श्रीरामलला के मंदिर निर्माण की खुशी भारत में ही नहीं, अपितु पूरे विश्व के सनातन परिवार में है। यह ऐसी खुशी है जो समस्त सनातन परिवार की संस्कृति एवं गौरव के जीवंत एवं जागृति के भाव से उत्पन्न हुई है। प्रभु श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए संघर्ष और समाधान से जुड़े उपरोक्त कई तथ्यानुगत सत्य को जब हम अलग-अलग भाषाओं में विश्व के पटल पर रखेंगे, तो समस्त सनातन परिवार हर्षित हो उठेगा। सभी अपने-अपने देश में संबंधित भाषाओं में प्रभु श्रीराम के मानव-कल्याण संदेश और अयोध्या में प्रभु के जन्मस्थान पर भव्य मंदिर के लिए संघर्ष की गाथा का बखान करेंगे।

जब हम सब मिलकर इस पुस्तक-ग्रंथ का वैश्विक स्तर पर प्रसार करेंगे तो निस्संदेह सनातन परिवार समेत भगवती सीता एवं प्रभु श्रीरामजी में आस्था रखने वाले अपनी संस्कृति पर गौरवान्वित होंगे। हमें पूरी आशा है कि इस ऐतिहासिक कार्य में आप महान प्रभु-भक्त की भागीदारी एवं मार्गदर्शन के साथ हमारे अगले उद्देश्यः ह्यरामायण पर रिसर्चह्न एवं उसकी व्यापकता को सफल बनाने में आप सभी श्रेष्ठजनों, महानुभावों एवं सज्जनों का आशीर्वाद हमें प्राप्त होता रहेगा। रामायण रिसर्च काउंसिल की पूरी टीम की ओर से पूरे सनातन परिवार को हृदय से करबद्ध प्रणाम।

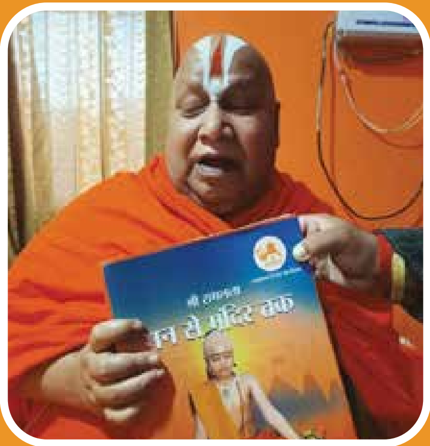

पद्मविभूषण पूज्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज

श्री श्री 1008 परमहंस स्वामी सांदीपेंद्र जी महाराज (माता बगलामुखी प्रांगण, नलखेड़ा, मप्र)

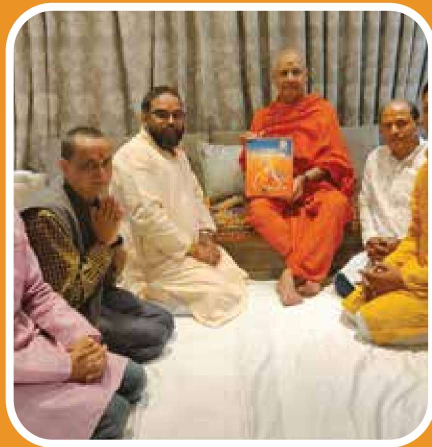

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के कोषाध्यक्ष परम पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरी जी महाराज जी

जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर पूज्य स्वामी अवधेशानंद गिरी जी महाराज

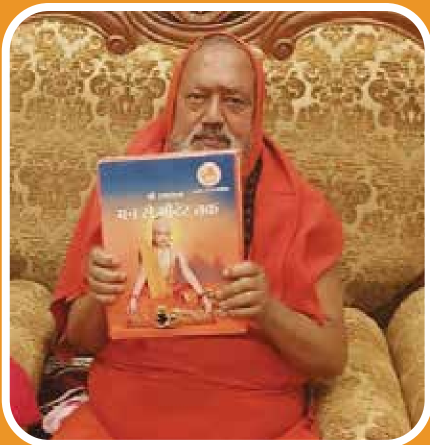

अमरकंटक में परम तपस्वी बाबा कल्याण जी महाराज का मिला आशीर्वाद।

परमार्थ निकेतन (ऋषिकेष, उत्तराखंड) के अध्यक्ष पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती जी।

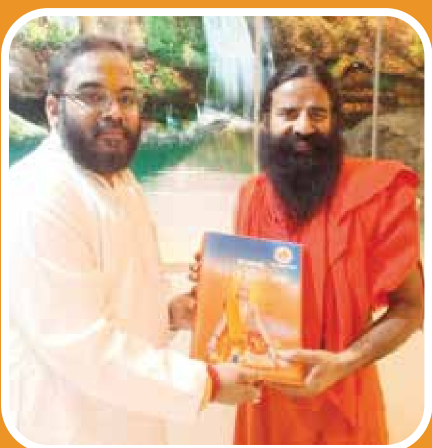

पुस्तक ग्रंथ की डमी प्रति के साथ योग गुरु स्वामी रामदेव जी

पूज्य मोरारी बापू जी का स्नेह

डॉ. आर.एन. सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद

श्री श्री 1008 बाबा कालिदास जी महाराज के साथ चर्चा के लिए आश्रम में केंद्रीय राज्य मंत्री एस.पी. सिंह बघेल।

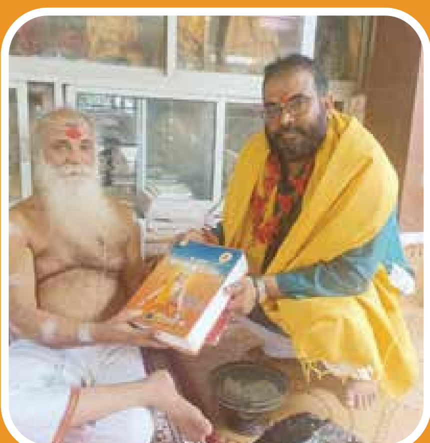

बिहार में सिमरिया घाट पर मां काली जी के अनन्य भक्त स्वामी चिदात्मन जी महाराज।

गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल जी

गणमान्यों को, इस उत्साहवर्धन के लिए साधुवाद

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

दिनांक : 24.02.2024

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि **रामायण रिसर्च काउंसिल** द्वारा प्रभु श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर हेतु 500 वर्षों के संघर्ष पर आधारित ग्रंथ **"श्रीरामलला–मन से मंदिर"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रभु श्रीराम के जन्मस्थान पर भव्य मंदिर–निर्माण के लिए 500 वर्षों के संघर्षों पर आधारित गहन शोध तथा 1108 पृष्ठों वाले इस ग्रंथ को जनमानस तक लाने के अपने अंतिम चरण में है जिसका हिन्दी सहित अन्य 10 अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में भी अनुवाद हो रहा है। मुझे आशा है कि प्रत्येक पाठक को इस ग्रंथ के माध्यम से श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर के 500 वर्षों के संघर्ष की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी।

मैं रामायण रिसर्च काउंसिल से जुड़े समस्त बन्धुओं को हार्दिक बधाई देता हूं तथा ग्रंथ के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

(राजनाथ सिंह)

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-110011
Tel. : +91 11 23012286, +91 11 23019030, Fax : +91 11 23015403
E-mail : rmo@mod.nic.in

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

दिनांक : 09 FEB 2024

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि रामायण रिसर्च काउंसिल, दिल्ली द्वारा 'श्रीरामलला–मन से मन्दिर' ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

अयोध्या में 22 जनवरी, 2024 को आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर–कमलों से भव्य और दिव्य श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर में प्रभु श्रीराम के बाल विग्रह रूप की प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। यह आयोजन भारत के आत्म–गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा का कार्यक्रम था। इससे भारत की सनातन आस्था गौरवान्वित हुई है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम भारतीय अस्मिता की पहचान हैं। प्रभु श्रीराम की मर्यादा हमें धैर्य की प्रेरणा देती है। यह धैर्य सनातन धर्मावलम्बियों ने पाँच सदियों तक किया। लगभग 500 वर्षों की लम्बी प्रतीक्षा के पश्चात सर्वानुमति से जन भावनाओं के अनुरूप श्रीरामलला के भव्य मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसके लिए हर स्तर पर प्रयास किया गया।

श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर के इतिहास से भावी पीढ़ियों को अवगत कराने के उद्देश्य से 'श्रीरामलला–मन से मन्दिर' ग्रंथ का प्रकाशन अभिनन्दनीय है। मुझे आशा है कि ग्रंथ में पाठकों के लिए संग्रहणीय सामग्री का संकलन किया जाएगा।

ग्रंथ के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

2289010 / 2289167 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

ब्रजेश पाठक
उप मुख्यमंत्री

चिकित्सा शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, परिवार कल्याण तथा मातृ एवं शिशु कल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश
कार्यालय कक्ष संख्या–99, 100, मुख्य भवन, विधान सभा सचिवालय
दूरभाष– 0522–2238088/2213272 (का0)
लखनऊः दिनांक

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है कि 'रामायण रिसर्च काउंसिल' द्वारा अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष पर 1108 पृष्ठ का एक ग्रंथ लिखने का संकल्प लिया था और आज लंबी प्रतीक्षा के बाद अब वह ग्रंथ जनमानस में प्रस्तुत किए जाने को तैयार है। इस ग्रंथ को विश्व के कई देशों के पुस्तकालयों में इस ग्रंथ को रखवाने का संकल्प है तो निश्चित ही इस विषय पर शोध भी होगा और यह संदर्भ–ग्रंथ भी बनेगा। उस दृष्टि से आज उत्तर प्रदेश में भाजपा अध्यक्ष होने के नाते में पूरे उत्तर प्रदेश के आंखों देखी जा रही राममय स्थिति को प्रस्तुत कर रहा हूँ।

दिनॉक 22 जनवरी 2024 को भगवान श्रीरामलला के प्राण–प्रतिष्ठा के दिन वैसे तो पूरे सनातन समाज के लिए गौरव का क्षण था, लेकिन जिस तरह अयोध्या से सिया–राम की गूंज उठी और पूरा विश्व राममय धुन पर झूम उठा, उसे आने वाला इतिहास याद रखेगा। मैं पूरे उत्तर प्रदेश की चर्चा करूं तो हर पंचायत से लेकर प्रखंड और जिला स्तर पर अलग–अलग कार्यक्रम हुए। सबसे आश्चर्य कि भगवान के आगमन की सूचना में हर वर्ग–धर्म के लोग इस क्षण का जश्न मना रहे थे। शाम होते ही पूरा प्रदेश दीपमय हो चुका था, मानो दीपावली हो।

रामलला की प्राण–प्रतिष्ठा के साथ ही अयोध्या दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक पर्यटन केंद्र बनने जा रही है। अयोध्या में आने वाले पर्यटकों की संख्या स्वर्ण मंदिर और तिरुपति मंदिर में जाने वाले श्रद्धालुओं से कहीं अधिक है। रिपोर्ट के मुताबिक अयोध्या में मंदिर निर्माण से लेकर अन्य इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास पर 850 अरब रुपए खर्च किया जाना है। अयोध्या में इतनी बड़ी संख्या में पर्यटकों के पहुंचने की संभावना को देखते हुए कई कम्पनियों एवं संस्थाएं अपना संचालन शुरू कर रही है, जिससे अयोध्या में रोजगार का भी सृजन होगा। अयोध्या में पर्यटकों की संख्या बढ़ने से भारत के कुल पर्यटन को भी प्रोत्साहन मिलेगा और भविष्य में इससे हमारे जीडीपी को बढ़ाने में मदद मिलेगी। गौरवशाली इतिहास इस क्षण को याद रखेगा।

मैं 'रामायण रिसर्च काउंसिल' संस्था को प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष पर रचित ग्रंथ के सफल लेखन के लिए अपनी शुभकामनएं देता हूँ।

(ब्रजेश पाठक)

श्री कल्कि धाम

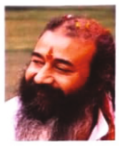

Ref: A.P.K.....0.010 Date : 14/02/24

"राष्ट्र रूप हैं भगवान राम"

- आचार्य प्रमोद कृष्णम-

भारत के लोक जीवन में, आध्यात्मिक विचारधारा में, राजनैतिक आदर्श में, वेद-पुराण में और राष्ट्र के जन-मानस में श्रीराम जिस गहराई से रचे बसे हैं, वह स्वयं ही इस बात का जीवंत प्रमाण है कि राम के बिना भारत के अस्तित्व की कल्पना भी संभव नहीं है। श्रीराम हमारे आदर्श हैं, हमारे भगवान् हैं।

धर्म के परम आदर्श स्वरूप धर्मावतार श्रीराम सृष्टि के नियंता हैं, राम एक परंपरा हैं, जीवन मूल्य हैं एक संस्कृति हैं। राम घट-घट व्यापी हैं तो साथ ही राम अयोध्या में सदेह प्रकट होने वाले रामलला भी हैं। राम भगवान् भी हैं और माता की गोद में बाल क्रीड़ा करते कौशल्या नन्दन भी हैं। राम अविनाशी हैं तो अयोध्यावासी भी हैं।

राम राष्ट्र हैं, राष्ट्र के प्राण हैं, राम राष्ट्र के मंगल हैं, राम राष्ट्र की आत्मा हैं, राम स्वयं राष्ट्र-रूप हैं। अपने श्रेष्ठ आदर्श आचरण एवं गुणों के कारण राम में ही राष्ट्र का स्वरूप प्रकट होता है। राम राष्ट्र रूप ही हैं। यही कारण है कि उस समय के ऋषियों और उसके बाद के विद्वानों ने भी राम को राष्ट्र के रुप में ही स्थापित किया है। स्वयं महर्षि बाल्मीकि प्रभु श्रीराम के सद्गुणों का वर्णन करते समय राम और राष्ट्र का एक ही रूप में उल्लेख करते हैं।

हमारा देश हिमालय से सागर पर्यंत विस्तारित है। श्रीराम के गुणों का परिचय देते हुए महर्षि बाल्मीकि लिखते हैं कि वह धैर्य में हिमालय एवं गंभीरता में समुद्र के समान हैं। 'समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव'। वह स्वयं 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कहकर मां एवं मातृभूमि को महिमामंडित करते हैं। वनवास जाते समय राजगुरु वशिष्ठ कैकेयी को बताते हैं - 'राम जहां राज नहीं करेगा, वह राष्ट्र नहीं होगा। राम जिस वन में रहेगा वह भी राष्ट्र हो जाएगा।'

भारत विविधता का देश है। प्रभु श्रीराम ने चौदह वर्ष की वन गमन अवधि में अयोध्या से चलकर सागर तक की यात्रा में सभी भेदों को मिटाया एवं समन्वय स्थापित किया। यही कारण है कि उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम राम सर्वत्र व्याप्त हैं। अपने आदर्श व्यवहार के कारण राम सब में एवं सभी राम में समाये हैं। इसी सत्य को गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'सिया राम मय सब जग जानी' कहकर गाया है।

राम इस देश का गौरवशाली इतिहास ही नहीं अपितु एक संस्कृति और मर्यादा के सर्वोच्च मानदंड के जीवंत प्रतीक हैं, एक जीता जागता आदर्श हैं। इस राष्ट्र की हजारों वर्ष की सनातन परम्परा के लोकनायक और मूलपुरुष हैं। भगवान राम राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं, वे राष्ट्र की आत्मा हैं।

श्री कल्किधाम : ग्राम-ऐंचोड़ा कम्बोह,पो0 असमोली, जि0 सम्भल, (उ.प्र.)
8/177, सै.-3, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ.प्र.)
Email : acharyapramodk@gmail.com | Twitter : @acharyapramodk | Web.: www.acharyapramodkrishnam.com
Facebook : Acharya Pramod Krishnam | Youtube : Acharya Pramod Krishnam | Whatsapp : 9717071288
Ph : 05923-221520, 0120-4118694, 09953220005, 09811278149

अरूण साव
उप मुख्यमंत्री
Arun Sao
Deputy Chief Minister

मंत्रालय, महानदी भवन,
नवा रायपुर अटल नगर, रायपुर
492002, छत्तीसगढ़
फोन: + 91 (771) 2221318, , 2510319
Mantralaya, Mahanadi Bhawan,
Nava Raipur Atal Nagar, Raipur 492002
Chhattisgarh
Ph.: +91-(771) 2221318, 2510319

क्रमांक. 01 रायपुर, दिनांक 09 / 02 /2024

छत्तीसगढ़ के कण-कण में बसे हैं प्रभु श्रीराम

छत्तीसगढ़ के कण-कण और रोम-रोम में प्रभु श्रीराम बसे हैं। वनवास के समय भगवान श्रीराम ने 14 साल में से 10 साल छत्तीसगढ़ में ही बिताये हैं। यहां की धरती पर नंगे पैर चले हैं। यहां की भूमि धन्य हैं, जो भगवान राम की लीलाओं को अपने अंदर समेटे हुई है। श्रीराम ने दंडकारण्य (वर्तमान बस्तर) समेत अनकों जगहों पर समय बिताये हैं। यहां के ऋषि-मुनियों से भेंट मुलाकात करने के साथ ही शिक्षा ग्रहण किए हैं। असुरों का संहार किए हैं। प्रभु श्रीराम के वनवास काल की यादें आज भी छत्तीसगढ़ के वनांचल क्षेत्रों में बिखरी हुई हैं। इन स्मृतियों को संजोने का काम किया जा रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि छत्तीसगढ़ के कण-कण और रोम-रोम में श्रीराम बसे हुए हैं।

22 जनवरी 2024 को भगवान श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रभु श्रीराम के ननिहाल छत्तीसगढ़ में भी उत्सव और आनंद का माहौल रहा। शाम होते ही ऐतिहासिक पल की यादों को संजोने के लिए पूरा छत्तीसगढ़ दीपावली सा प्रतीत होने लगा। घर जगमग हो चुके थे। जगह-जगह आयोजन हुए। मंदिरों की साफ-सफाई, मानस गान सहित मंदिरों में भण्डारे के आयोजन हुए। छत्तीसगढ़ में माता शबरी की नगरी, शिवरीनारायण और माता कौशल्या की नगरी चंदखुरी में भव्य रामोत्सव का आयोजन किया गया। पूरे मंदिर परिसर की आकर्षक सजावट की गई।

प्रभु श्रीराम का छत्तीसगढ़ से गहरा नाता रहा है। मान्यता है कि त्रेतायुग में छत्तीसगढ़ को दक्षिण कोसल के नाम से जाना जाता था। दक्षिण कोसल को ही श्रीराम का ननिहाल कहा जाता है। प्रभु श्रीराम ने वनवास काल का अधिकांश समय यहीं बिताया। इसके कई स्मृति चिन्ह आज भी मौजूद हैं। श्रीराम के पुत्र कुश की राजधानी श्रावस्ती (वर्तमान में सिरपुर, जिला महासमुन्द) में होने के प्रमाण विभिन्न ग्रंथों में मिलते हैं। सिहावा क्षेत्र को सप्तऋषियों की तपोभूमि कहा जाता है। जनश्रुतियों के अनुसार, सिहावा के प्राचीन मंदिर कर्णेश्वर मंदिर का संबंध त्रेतायुग से बताया जाता है।

पूरे देश में संभवतः छत्तीसगढ़ ही ऐसा राज्य है, जहां लोग अपने भांजे के पैर छूकर प्रणाम करते हैं। दक्षिण कोसल श्रीराम का ननिहाल होने के कारण उन्हें समूचे छत्तीसगढ़ का भांजा माना जाता है। यहां लोग प्रभु श्रीराम को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हैं। इसी कारण यहां के लोग अपने भांजे को श्रीराम का स्वरूप मानते हुए प्रणाम करते हैं और यह परिपाटी पूरे प्रदेश में है।

रामचरितमानस के बालकांड, किष्किंधा कांड और अरण्य कांड में त्रेतायुग के ऋषि मुनियों को सताने वाले, उनके यज्ञ का ध्वंस करने वाले राक्षसों का वर्णन है। वनवास काल में ही इन्हीं राक्षसों का वध प्रभु श्रीराम और लक्ष्मण द्वारा किए जाने का उल्लेख है। तत्कालीन दंडक क्षेत्र वर्तमान में बस्तर संभाग के अधिकांश जिलों में सम्मिलित है।

वनवास के दौरान माता सीता का अपहरण किए जाने के बाद उनकी खोज में प्रभु श्रीराम और लक्ष्मण वन में यत्र तत्र भटकते रहे। यहीं उनकी भेंट शबरी माता से हुई। जब शबरी को पता चला कि भगवान श्रीराम स्वयं उसके आश्रम आए हैं तो वह एकदम भाव विभोर हो उठी और ऋषि मतंग के दिए आशीर्वाद को स्मरण करके गदगद हो गई। वह दौड़कर अपने प्रभु श्रीराम के चरणों से लिपट गई। इस भावनात्मक दृश्य को गोस्वामी तुलसीदास इस प्रकार रेखांकित करते हैं:

"सरसिज लोचन बाहु बिसाला। जटा मुकुट सिर उर बनमाला।।
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। सबरी परी चरन लपटाई।।
प्रेम मगर मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा।।
सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे।। "

शिवरीनारायण (जिला जांजगीर) में स्थापित मंदिर में इसके अनेकों प्रमाण उपलब्ध हैं। मंदिर प्रांगण में एक अतिप्राचीन बरगद का पेड़ है जिसके पत्ते आज भी दोना के आकार में मुड़े हुए हैं। मान्यता है कि शबरी ने इसी पेड़ के पत्तों से दोना बनाकर प्रभु श्रीराम को जूठे बेर परोसे थे। यहीं समीप के ग्राम खरौद में लक्ष्मणेश्वर मंदिर है जहां राम के अनुज लक्ष्मण ने शक्ति बाण के दुष्प्रभाव से मुक्त होने यहां स्थित प्राचीन शिवलिंग पर चावल के एक लाख साबूत दाने चढ़ाए थे। इसके बाद वे मेघनाथ के द्वारा चलाए गए शक्ति बाण के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त हो गए।

प्रभु श्रीराम से जुड़े छत्तीसगढ़ के प्रमुख स्थान:-

- माता कौशल्या की नगरी चंदखुरी, चंपारण्य- जिला रायपुर
- शिवरीनारायण- जिला जांजगीर चांपा
- कुलेश्वर मंदिर राजिम, फिंगेश्वर- जिला गरियाबंद
- तुरतुरिया स्थित वाल्मीकि आश्रम- जिला बलौदाबाजार
- श्रीराम के पुत्र कुश की राजधानी श्रावस्ती - (वर्तमान में सिरपुर, जिला महासमुन्द)
- सिहावा सप्तऋषियों की तपोभूमि- जिला धमतरी
- सीताबेंगरा की गुफा- जिला सरगुजा
- प्रभु श्रीराम का खल्लारी- जिला महासमुन्द
- सीतामढ़ी-हरचौका- जिला मनेद्रगढ़-चिरमिरी
- रामगढ़- जिला सरगुजा
- चित्रकोट, नारायणपाल, तीरथगढ़- जिला बस्तर
- बारसूर- जिला दंतेवाड़ा
- मल्हार-जिला बिलासपुर
- कंक आश्रम-जिला कांकेर
- रामाराम, इंजरम, कोटा- जिला सुकमा
- देवगढ़- जिला सरगुजा
- किलकिला, रक्सगंडा - जिला जशपुर

(अरुण साव)

दिया कुमारी
उप मुख्यमंत्री
Diya Kumari
Dy. Chief Minister

वित्त, सार्वजनिक निर्माण, पर्यटन, कला, साहित्य, संस्कृति और पुरातत्व,
महिला एवं बाल विकास, बाल अधिकारिता विभाग,
राजस्थान सरकार
Finance, PWD, Tourism, Art, Literature, Culture and
Archaeology, W&CD and Child rights Department
Government of Rajasthan

आज देवता भी कर रहे भगवान का मंगल–यश–गान

लेखिका – राजकुमारी दिया कुमारी, मा0 उप मुख्यमंत्री, राजस्थान

अयोध्या कोई साधारण धरती नहीं, साक्षात भगवान नारायण के अवतार श्रीरामलला की जन्म–भूमि है। उनकी प्राण–प्रतिष्ठा के उत्सव की भनक पाकर भुवन भास्कर भी एक सप्ताह पूर्व ही उत्तरायण हो चुके हैं। सरस सलिला सरयू में डुबकी लगाकर उनकी रश्मियां प्रभु के निल श्रीचरणों को चूम लेने के लिए विह्वल हुए जा रहीं। श्रीराम मंदिर परिसर में अर्चावतार (श्रीराम का बाल स्वरूप) विराजमान हैं। 16 कलाओं में सिद्धहस्त चंद्रमा नभ–मण्डल से उतर रहे। प्रभु की शयन आरती उन्हें की करनी है। उनके साथ पूरी आकाश गंगा ही धरा लोक पर अतर आई है। ब्रह्माजी ने वेदों को उन्मुक्त गान का निर्देश दिया है। मंगलगान के लिए साक्षात देवी सरस्वतीजी को बधाई गान करना है और वीणा वादन नारदजी को। महादेव स्वयं स्तुति गान करने वाले हैं। जब प्रभु विराजेंगे तो जो भी प्रभु के श्रीचरणों में गायन करेंगे, उनके मुख से जो आवाज निकलेगी वो साक्षात देवध्वनि होगी। 8 वसु, 12 आदित्य, 11 रूद्र, इंद्र व प्रजापति सहित 33 कोटि देवी–दवेता, 9 ग्रहों और 27 नक्षत्रों के साथ सप्त सिंधु, समस्त सरिता और सप्तपुरियों की शेष संख्या भी प्रभु की अगुवाई में पधार चुकी है। छोटी देवकाली मंदिर में ब्राह्मण दुर्गा–सप्तशती का अहर्निश पाठ कर रहे हैं। उनमें साक्षात हनुमानजी भी एक हैं, वे विप्र रूप धारण कर एक कोने में बैठे हैं, वे भगवती का ध्यान कर रहे हैं, सीता–राम को हृदय में धारण किए हुए हैं, भावुक हो रहे हैं।

नागेश्वरनाथ मंदिर के कोटे–परकोटे तक जगमग हो रहे। भगवान श्रीरामलला सैकड़ों वर्षों बाद अपने घर आ रहे हैं। प्रतीक्षा पूर्ण हुई है। आराध्य के विग्रह में प्राण–प्रतिष्ठा का अवसर ही दीपावली का संयोग है। बड़े हनुमानजी के मंदिर में घी के दीये जल रहे हैं। प्रभु श्रीराम के प्रति देवों की इस आसक्ति से पुरवासी प्रफुल्लित हो रहे। चौक–चंदन पूरे घर–आंगन में चौमुख दीप जल रहे। दीप अपनी लौ पर इठला रही हैं। इस तरह ज्योति फैला रही हैं जैसे मानो उनके भगवान के श्रीचरणों में वे अपना श्रद्धा–सुमन अर्पित कर रही हों। अवधपुरी महातीर्थ है। भगवान गणेश देवताओं में प्रथम पूजित हैं, वे अयोध्या में शुभ–मंगल प्रदान कर रहे हैं। भगवान नारायण के अवतार के उनके सुंदर छवि का गुण–गान करते अघा नहीं रहे हैं। आज वह शुभ घड़ी बन आई है। ऋषि–मुनि, साधु–संत, ब्राह्मण–पुरोहित के स्वस्ति वाचन, मंत्रोच्चार और वेद–ऋचाओं की अनुगूंज से अवधपुरी गुंजायमान हो रही है। मठ–मंदिरों में अहर्निश पूजा–अर्चना और अष्टयामी विधि–विधान का निर्वहन हो रहा। नभ की ओर उन्मुक्त ध्वज–पताकाएं व वैभवशाली प्रकाश–स्तंभ अश्वमेघ के आधार प्रतीत हो रहे। शंखनाद से समवेत हो घड़ी–घंट की अनुगूंज दिक–दिगंतर तक सनातन संस्कृति के सदा जय की जयघोष कर रहे हैं, मानो, वे कह रहे हैं कि यह ध्वनि भी भगवान की आभा के कारण ही है, ये संसार ही हमारे प्रभु के कारण है, इसलिए उन्हें ध्वनि–गूंज से बारंबार नमस्कार है।

कमरा नं. 3104–05, मुख्य भवन, शासन सचिवालय, जयपुर–302005
फोन नं. 0141–2227533 | ई–मेल – diyakumarideputycm@rajasthan.gov.in
फोन 0141–2222199, 2222121 | ई–मेल–diyakumarioffice@gmail.com

दिया कुमारी
उप मुख्यमंत्री
Diya Kumari
Dy. Chief Minister

वित्त, सार्वजनिक निर्माण, पर्यटन, कला, साहित्य, संस्कृति और पुरातत्व,
महिला एवं बाल विकास, बाल अधिकारिता विभाग,
राजस्थान सरकार
Finance, PWD, Tourism, Art, Literature, Culture and
Archaeology, W&CD and Child rights Department
Government of Rajasthan

22 जनवरी 2024 को जब सूर्य भगवान का उदय हुआ तो वह बिल्कुल नव–सूर्य के उदय का उद्घोष कर रही है, ऐसा लगा जैसे आदित्य–हृदय का पाठ ये प्रकृति उनके लिए स्वयं कर रही है। अयोध्या का रोम–रोम पुष्प–पत्र से सुसज्जित और सुरूचिकर गंध से सुवासित अपनी पुरी को निरखकर प्रभु प्रसन्न और पुलकित हैं। भक्तों को अविरल भक्ति और अविचल शक्ति का वरदान दे रहे। वानर–सेना हाथ जोड़कर खड़ी है। श्री हनुमानजी अपने आराध्य भगवान श्रीरामलला की प्राण–प्रतिष्ठा से पूर्व राम–राम–राम का वाचन कर अंतर्ध्यान हैं।

जैसे ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अयोध्या उतरेंगे, श्री हुनमानजी उनके पूरे शरीर को अपने आगोश में लेकर अपने प्रभु को पुष्प–अर्पित करते दिखेंगे। चारों वेद प्रभु की प्रार्थना–अभ्यर्थना कर चुके हैं। अब शिवजी स्तुति कर रहे:

जय राम रमारमनं समनं। भवताप भयाकुल पाहि जनं।।

अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत मागत पाहि प्रभो।।

(दिया कुमारी)

कमरा नं. 3104–05, मुख्य भवन, शासन सचिवालय, जयपुर–302005
फोन नं. 0141–2227533 | ई–मेल – diyakumarideputycm@rajasthan.gov.in
फोन 0141–2222199, 2222121 | ई–मेल–diyakumarioffice@gmail.com

ले ज गुरमीत सिंह
पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (से नि)
राज्यपाल उत्तराखण्ड

राजभवन उत्तराखण्ड
देहरादून 248003
दूरभाष : 0135-2757400
2757403

सत्यमेव जयते

10.08.2022

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि 'रामायण रिसर्च काउंसिल(न्यास)' द्वारा अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर निर्माण के संघर्ष पर आधारित पुस्तक हिन्दी के अलावा 10 अन्य अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में लेखन एवं प्रकाशन का कार्य किया जा रहा है। राम मंदिर निर्माण में करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी है तथा रामायण रिसर्च काउंसलिंग द्वारा लोगों को श्रीराम मंदिर के निर्माण में आये विभिन्न कठिनाइयों को पुस्तक के माध्यम से अवगत कराया जा रहा है जो सराहनीय पहल है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम और उनका जीवन देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए एक आदर्श है और उनके आदर्शो पर चलकर ही सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण संभव है। अनादि काल से ही भगवान श्रीराम में देशवासियों की अटूट आस्था, श्रद्धा व विश्वास रहा है। उनका चरित्र एवं जीवन-दर्शन भारतीय संस्कृति की आधारशिला है।

मुझे आशा है कि 'रामायण रिसर्च काउंसिल(न्यास)' द्वारा प्रकाशित पुस्तक, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्शों एवं लोक कल्याण संदेशों को न केवल हमारे देश बल्कि सम्पूर्ण विश्व तक प्रचार-प्रसार करेगी।

पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

गुरमीत

ले ज गुरमीत सिंह
पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम, वीएसएम (से नि)

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि भारतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के पावन उद्देश्यों से प्रेरित 'रामायण रिसर्च काउंसिल' मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम से जुड़ी अनेक रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन करते हुए, "श्री रामलला - मन से मंदिर तक" जैसी महत्वपूर्ण शोधात्मक कृति का प्रकाशन करने जा रही है।

भारतीय संस्कृति मूलतः आध्यात्मिक संस्कृति है, जिसकी जड़ें 'धर्म' द्वारा सिंचित हैं। हमारे प्राचीन साहित्य में जीवन के लिए धारण किये जाने योग्य दस उदात्त लक्षणों को धर्म के अंतर्गत रखा गया है :

"धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकम् धर्म लक्षणम् ॥"

धर्म को सदैव व्यापक अर्थ में स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि यह मानवता के प्रति व्यक्तिगत और सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक, सांसारिक तथा पारलौकिक सभी रूपों में विभिन्न कर्तव्यों के पालन में निहित होता है। इसी दृष्टि से असंख्य जनमानस के हृदय में विष्णु के सातवें अवतार भगवान श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में विराजमान हैं।

'राम' शब्द संस्कृत के 'रम्' धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ है कि वे प्रत्येक प्राणीमात्र के हृदय में रमण (निवास) करते हैं, इसलिए कहा गया है - "रमन्ते कणे-कणे इति रामः"। भारतीय समाज में मर्यादा, आदर्श, विनय, विवेक, संयम, नीति, न्याय, नेतृत्व और लोकतांत्रिक मूल्यों का सर्वोत्कृष्ट रूप हैं - भगवान श्री राम। हमारे समाज में रामकथा का सम्बन्ध लोकमानस के साथ है, इसलिए रामकथा के प्रसंगों के संदर्भ में भी कहा गया है - "रामायण शतकोटि अपारा"।

संस्कृत में आदि कवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण (आर्ष रामायण) रामकथा का आर्षपीत रूप है। लेकिन श्री राम कथा केवल वाल्मीकीय रामायण तक सीमित नहीं रही बल्कि मुनि व्यास रचित महाभारत में भी 'रामोपाख्यान' के रूप में 'आरण्यक पर्व' में यह कथा उपलब्ध है। बौद्ध परम्परा में भगवान श्री राम से सम्बंधित 'दशरथ जातक' तथा 'अनामक जातक' जैसी कथाएं उपलब्ध हैं, वहीं जैन साहित्य में कवि स्वयंभू ने अपभ्रंश में 'पउम चरिउ' जैसे महान ग्रंथ की रचना की है। भारतीय भाषाओं में यदि रामकथा के स्वरूप को देखा जाए तो 15वीं शताब्दी में उड़िया के आदिकवि बलरामदास द्वारा रचित [illegible] और बाद में रामायण के महत्वपूर्ण कवि एवं उड़िया उपन्यास-सम्राट फकीर मोहन सेनापति द्वारा प्रस्तुत इसका पद्यानुवाद भी अनुपम कृतियाँ हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि इस प्रकार जन-जन के हृदय में विराजमान मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के अयोध्या में भव्य मंदिर का निर्माण माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार आदरणीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में आरम्भ हो गया है। 'रामायण रिसर्च काउंसिल' को इस महत्वपूर्ण विषय पर पुस्तक प्रकाशित करने हेतु मैं हार्दिक शुभकामनाएं एवं साधुवाद प्रेषित करता हूँ।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा — कौशल भारत, कुशल भारत

MOE - Room No. 3, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhawan, New Delhi-110 115, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

ARIF MOHAMMED KHAN
GOVERNOR OF KERALA

सत्यमेव जयते

RAJ BHAVAN
THIRUVANANTHAPURAM-695 099

25 - 09 - 2021

प्रिय श्री कुमार सुशांत जी,

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता है कि रामायण रिसर्च काउंसिल ने श्री राम जन्मभूमि पर राम मंदिर के निर्माण के लिये चले लम्बे संघर्ष पर गहन शोध किया है और इस इतिहास को पुस्तक रूप देने का निर्णय किया है। 1108 पृष्ठों के साथ यह एक बड़ी पुस्तक होगी जिसे हिन्दी और संस्कृत में छापा जायेगा। इसी के साथ पुस्तक का 10 अन्य अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद भी छापा जायेगा। यह पुस्तक अयोध्या की पौराणिक महत्ता तथा आन्दोलन में भाग लेने वाले श्रद्धालुओं और आंदोलन के इतिहास और विभिन्न आयामों पर एक प्रामाणिक प्रलेख होगी।

मैं मानता हूँ कि यह पुस्तक अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के मंदिर के निर्माण के लिये चले लम्बे आन्दोलन के माध्यम से भारतीय संस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति भी करेगी और एक बार फिर हम दुनिया को यह बता सकेंगे कि आज पूरा विश्व जिस सार्वभौमिक और समावेशी व्यवस्था को बनाने का सपना देख रहा है उन आदर्शों का सूत्रपात भारत ने कई हजार वर्ष पहले अपने समाज में सफलता से किया था।

इस पुस्तक के सफल प्रकाशन के लिये रामायण रिसर्च काउंसिल को मेरा साधुवाद। वह सभी महानुभाव जिनके लेख इस पुस्तक में हमें पढ़ने को मिलेंगे उनको धन्यवाद और शुभकामनाएँ।

सद्भावी,

(आरिफ मोहम्मद खाँ)

श्री कुमार सुशांत
संस्थापक महासचिव रामायण रिसर्च काउंसिल
नई दिल्ली

Brig. (Dr.) B. D. Mishra (Retd.)
Governor
Arunachal Pradesh

सत्यमेव जयते

RAJ BHAVAN
ITANAGAR-791111

शुभकामना संदेश

दृष्टिः हरं नाभिकान्यते दृष्टिः स्थापयति नाभिमतम्।
दृष्टिर्दर्शति न पार्श्विको, रामो दृष्टिर्निबिंबयते॥
(हनुमन्नाटक 1-48)

सुदीर्घ संघर्ष के सुखद सफलता से श्री रामलला के भव्य मंदिर के निर्माण का कार्य प्रारंभ होने पर समस्त जन मानस प्रसन्नता से भाव-विभोर है। आज अनगिनत श्री राम अनुयायियों के सदियों का स्वप्न साकार हो रहा है।

रघु वंशज मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, संसार के कल्याण हेतु, प्रत्येक प्राणी में चेतना, सजीवता, लोकतांत्रिक मूल्य, सुशासन "रामराज्य" और न्याय-व्यवस्था के एक अमिट प्रतिबिम्ब की तरह, सदैव विराजमान हैं। हर मानव वर्ग भगवान श्रीराम के शौर्य, शील, कर्तव्य परायणता और समदर्शी चरित्र के कारण उन्हें अपना नायक मानता है। भगवान श्रीराम सभी समुदाय के पालक-पोषक एवं संरक्षक थे, इसी कारण उनके अपार शक्तिशाली व्यक्तित्व को मानवीय करुणा पटल पर 'पतित पावन' की संज्ञा अंकित की गई है। उनके व्यक्तित्व में भारतीय जनमानस के राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा के लिये सम्पूर्ण विधान और अभिव्यक्तियाँ निहित हैं।

आदि कवि वाल्मीकि ने, सुःख, दुःख में समान मनोदशा धारण करने वाले, कर्मवीर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के व्यक्तित्व का परम यथार्थ चित्रण इन शब्दों में किया है **"आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च। न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः"** (अर्थात्, राज्य अभिषेक के लिए बुलाये हुए और वन के लिए विदा किए हुए रामचन्द्र के मुख के भाव में कुछ भी अन्तर नहीं देखा जा सकता था)। यह मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की ही अनुकंपा है कि आज भारत का शीर्ष नेतृत्व भी राष्ट्र निर्माण हेतु श्रीराम जी के द्वारा स्थापित आदर्शों का पालन कर रहा है।

रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में 'प्रभु श्रीराम मंदिर (अयोध्या) संघर्ष' पर गहन शोध के माध्यम से 1108 पृष्ठों की पुस्तक "श्रीरामलला-मन से मंदिर तक" की रचना विश्व के सम्पूर्ण राम भक्तों के लिये एक परम प्रिय पुस्तक होगी। इस पावन पुस्तक का हिंदी के अतिरिक्त 10 अन्य भाषाओं में अनुवाद तथा इसकी 21 देशों में विमोचन की श्रेष्ठ योजना हर भारतीय के लिये एक गर्व का विषय है। निश्चित रूप से यह कार्यक्रम भारत के गौरवशाली इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ेगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुनीत रचना के हर पाठक को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के चरित्र की मर्यादाओं के अनुकरण करने की प्रेरणा मिलेगी तथा भारत राष्ट्र की एकता एवं अखंडता में उनका अनवरत सहयोग प्राप्त होगा। श्रेष्ठ पुस्तक "श्रीरामलला-मन से मंदिर तक" की रचना एवं इसके प्रकाशन के लिये मैं, 'रामायण रिसर्च कौंसिल' एवं उनके सहयोगियों को हृदय से शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ एवं अत्यन्त विनम्रता से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के चरणों में श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ।

बी. द. मिश्र
ब्रिगेडियर (डॉ.) बी.डी. मिश्रा (से.नि.)

रमेश बैस

राजपाल, झारखंड

राज भवन
रांची - 834001
झारखंड

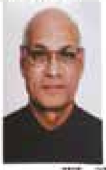

संदेश

यह अपार प्रसन्नता का विषय है कि रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा श्रीराम मंदिर संघर्ष पर अत्यन्त गहन शोध पर आधारित पुस्तक **"श्रीरामलला- मन से मंदिर तक"** का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पुस्तक का हिन्दी एवं संस्कृत के अतिरिक्त दस अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में में भी प्रकाशन हो रहा है जिससे अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो सकें।

प्रभु श्री राम के आदर्श एवं विचार भारतवर्ष की आत्मा में बसते हैं। उन्होंने जिन मानवीय मूल्यों और आदर्शों की स्थापना की, वे युगों तक समस्त मानव जन का पथ-प्रदर्शन करेंगे। उन्होंने कर्त्तव्य परायणता एवं शाश्वत मूल्यों के सहज निर्वाह द्वारा समाज के सामने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका चरित्र एवं जीवन-दर्शन भारतीय संस्कृति की आधारशिला है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा प्रकाशित की जा रही यह पुस्तक श्री राम के आदर्श एवं जीवन-दर्शन के झलक को प्रस्तुत करने की दिशा में जनमानस अपनी अमिट पहचान स्थापित करेगी।

(रमेश बैस)

Bandaru Dattatraya
Governor, Haryana

बंडारू दत्तात्रेय
राज्यपाल, हरियाणा

संदेश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता हुई है कि भारतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से "रामायण रिसर्च काउंसिल" मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम जी के आदर्श व विचार संकलित कर "श्री रामलला-मन से मंदिर तक" जैसी महत्वपूर्ण कृति का प्रकाशन करने जा रहा है। प्रभु श्री राम के आदर्शों पर आधारित ग्रंथ तैयार करना "रामायण रिसर्च काउंसिल" का एक ऐतिहासिक व सराहनीय कदम है।

आरामःकल्पवृक्षाणां विरामःसकलापदाम्। अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः।।

अर्थात्- जो कल्प वृक्षों के बगीचे के समान विश्राम देने वाले हैं, जो समस्त विपत्तियों को दूर करने वाले हैं और जो तीनों लोकों में सुंदर हैं, वही श्रीमान राम हमारे प्रभु हैं। प्रभु श्री राम के आदर्श एवं विचार भारतवर्ष की आत्मा में बसते हैं। उन्होंने जिन मानवीय मूल्यों और आदर्शों की स्थापना की, वे युगों-युगों तक समस्त मानव जन का पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे। उनके जीवन से कर्तव्य परायणता, सहनशीलता, धैर्य, दयालुता और आदर्श रिश्तों की शिक्षा मिलती है। उनका चरित्र एवं जीवन-दर्शन भारतीय संस्कृति की आधारशिला है।

श्री राम के आदर्श जीवन पर आधारित इस पुस्तक से हमारी युवा पीढ़ी को एक अमूल्य सांस्कृतिक साहित्य मिलेगा जिसका अध्ययन कर आने वाली पीढ़ियां मानवीय मूल्यों व नैतिक शिक्षा से ओत-प्रोत होंगी। इसके साथ-साथ इस ग्रंथ के आधार पर हमारी शिक्षण संस्थाओं में शोधार्थी वर्तमान जीवन की प्रासंगिकताओं से जोड़ कर शोध कर पाएंगे।

रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में प्रभु श्री राम मंदिर, अयोध्या संघर्ष पर गहन शोध के माध्यम से 1108 पृष्ठों की पुस्तक "श्रीरामलला: मन से मंदिर तक" की रचना विश्व के सम्पूर्ण राम भक्तों के लिए एक परम प्रिय पुस्तक होगी। इस पावन पुस्तक का हिन्दी के अतिरिक्त 10 अन्य भाषाओं में अनुवाद तथा इसकी 21 देशों में विमोचन की श्रेष्ठ योजना हर भारतीय के लिए एक गर्व का विषय है, जिससे विश्वभर में भारतीय संस्कृति की ध्वजा फहराएगी। निश्चित रूप से यह कार्यक्रम भारत के गौरवशाली इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ेगा।

मैं आशा करता हूं कि श्री सीता-रामजी के आदर्श जीवन-दर्शन को प्रतिबिम्बित करने वाली यह पुस्तक पूरे विश्व को मानव-कल्याण के लिए प्रेरित करेगी। इस कार्य में पूर्ण मनोभाव से अपना योगदान देने वाली रामायण रिसर्च काउंसिल की पूरी टीम को बधाई देता हूं और पुस्तक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान करता हूं।

(बंडारू दत्तात्रेय)

हरियाणा राजभवन, चण्डीगढ़ - 160019
Haryana Raj Bhavan, Chandigarh - 160019
EPABX - 0172-2740661, 2740663
Fax - 0172-2740667
e-mail : governor@hry.nic.in

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़, भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

क्र./133/पीआरओ/रास/2020
रायपुर, दिनांक 21 अक्टूबर 2020

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि नमो मंत्र फाउंडेशन द्वारा **'मिशन 2023-हर घर में राम'** अभियान चलाया जा रहा है। रामलीला मंचन के पारंपरिक आयोजन की आध्यात्मिक कड़ी को और सशक्त बनाने के लिए फाउंडेशन के राष्ट्रीय संयोजक गोस्वामी सुशील जी महाराज के मार्गदर्शन में नौ पार्ट्स सीरीज के समग्र डिजिटल रामलीला मंचन का प्रोड्यूस किया गया है।

यह खुशी की बात है कि डिजिटल रामलीला मंचन के संबंधित वीडियो नमो मंत्र के मोबाइल एप्लीकेशन पर प्रदर्शित किया जाएगा। इससे प्रभु श्रीराम के मानव कल्याण के संदेशों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सकेगा और समाज में चेतनशील की भावना का विकास होगा। साथ ही मुझे यह जानकर भी खुशी हुई कि श्रीरामलला : मन से मंदिर तक पुस्तक 10 भाषाओं में लिखी जा रही है।

डिजिटल रामलीला मंचन का प्रदर्शन और श्रीरामलला : मन से मंदिर तक पुस्तक प्रकाशन की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(सुश्री अनुसुईया उइके)

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल,
मध्यप्रदेश

राजभवन,
भोपाल
मध्यप्रदेश

क्रमांक 314/राजभवन/2020
भोपाल, दिनांक 12 अक्टूबर, 2020

संदेश

हर्ष का विषय है कि नमो मंत्र फाउंडेशन द्वारा कोविड-19 संकट के दृष्टिगत रामलीला मंचन के पारंपरिक आध्यात्मिक आयोजन की निरंतरता बनाए रखने के लिए समग्र डिजिटल रामलीला मंचन किया जा रहा है। फाउंडेशन द्वारा मिशन 2023 हर घर में राम के तहत पुस्तक लेखन के भी राम चरित मानस के अधिक से अधिक विस्तार का प्रयास और 'श्रीरामलला मन से मंदिर तक' पुस्तक-लेखन की पहल सराहनीय है।

भगवान श्रीराम के जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है, जहां वह हमें प्रेरणा नहीं देते हैं। हमारी हर आस्था में प्रभु राम झलकते हैं। राम भारत की विरासत और दर्शन में हैं। हजारों साल पहले वाल्मीकि रामायण में जो राम प्राचीन भारत का पथ प्रदर्शन कर रहे थे, वही मध्ययुग में तुलसी, कबीर और नानक के जरिए भारत को बल दे रहे थे। आजादी की लड़ाई के समय बापू के भजनों में भी राम अहिंसा और सत्याग्रह की शक्ति बनकर मौजूद थे। रामलीला से श्री राम के आदर्श, सीता माँ की पतिव्रता और भरत, लक्ष्मण जैसे भाइयों के चरित्र की प्रेरणा मिलती है। माता-पिता और भाई-बहन के प्रति प्रेम, सम्मान और आदर की भावना जागृत होती है। यह परिवार और समाज में एकता, सौहार्द और सद्भाव का वातावरण मजबूत करता है।

मुझे विश्वास है कि फाउंडेशन के कार्य हमारी संस्कृति, समरसता, अनेकता में एकता की विशिष्टता और धार्मिक आस्था को जन-जन तक पहुंचा कर, आदर्श और संस्कारवान समाज के निर्माण में सफल होंगे।

शुभकामनाएँ।

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0755-2858828, 2858830, फैक्स : 0755-2858822, ई-मेईल : mprajbhavan@mp.gov.in

फागू चौहान
PHAGU CHAUHAN

राज भवन
पटना-800 022
RAJ BHAVAN
Patna - 800022

राज्यपाल, बिहार
GOVERNOR OF BIHAR

27 जुलाई, 2021

संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर निर्माण हेतु किये गये संघर्ष पर आधारित एक वृहदाकार पुस्तक "श्रीरामलला– मन से मंदिर तक" का 'रामायण रिसर्च काउन्सिल' द्वारा हिन्दी एवं संस्कृत के अतिरिक्त 10 अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में प्रकाशन कराया जा रहा है तथा संबंधित भाषाओं वाले 21 देशों में इसका विमोचन होगा।

श्रीराम सनातन धर्मावलम्बियों के आराध्य हैं तथा उनकी मर्यादा, आचरण व कर्म भारतीय संस्कृति के आधार हैं। यह हर्ष और संतोष का विषय है कि एक लंबे और कठिन संघर्ष के बाद 9 नवम्बर, 2019 को माननीय सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के जन्मस्थान अयोध्या में उनके मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

आशा है, शोधपरक तथ्यों पर आधारित यह पुस्तक श्रीराम मंदिर निर्माण हेतु किये गये संघर्ष एवं भगवान श्रीराम, भगवती सीता व रामायण से संबंधित ज्ञानवर्द्धक, उपयोगी एवं प्रमाणिक जानकारियों का महत्वपूर्ण दस्तावेज साबित होगा।

प्रकाश्य पुस्तक "श्रीरामलला– मन से मंदिर तक" से जुड़े सभी महानुभावों को साधुवाद एवं इसके सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक मंगलकामनाएँ।

(फागू चौहान)

Phone : 0612-2786100-107, Fax : 0612-2786178
e-mail : governorbihar@nic.in

Prof. Ganeshi Lal
Governor, Odisha
ପ୍ରଫେସର ଗଣେଶୀ ଲାଲ
ରାଜ୍ୟପାଳ, ଓଡ଼ିଶା

RAJBHAVAN
BHUBANESWAR - 751 008
ରାଜଭବନ
ଭୁବନେଶ୍ୱର-୭୫୧ ୦୦୮

No-479/Ao
अगस्त 31, 2021

Hon'ble Union Minister,

आपके शुभकामनाओं के लिए मैं आभारी हूँ । इस भयंकर कोरोना महामारी के दौरान समाज में सकरात्मकता लाने और मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम के गुणगान हेतु 'रामायण अनुसंधान परिषद', अयोध्या द्वारा किए गए महान् कार्यों से अवगत कराते हुए जो पत्र आपने भेजा है, उसे पढ़कर मुझे बहुत खुशी हो रही है । 'रामायण अनुसंधान परिषद' का आगामी प्रकाशन "श्रीरामलला–मन से मंदिर तक" एक नेक और सराहनीय कार्य है, जिसका उद्घाटन भारत के अलावा 21देशों में भी होना है ।

इस मूल्यवान प्रकाशन के लिए मैं अपना शुभकामना संदेश भेजकर, खुद को धन्य मानता हूँ । मुझे विश्वास है कि इसके पाठक और हर उत्साही भक्त, राम जन्मभूमि की पवित्रता के साथ–साथ अयोध्या में एक 'भव्य राम मंदिर' के निर्माण हेतु तय की गई लम्बी यात्रा पर समर्पित होंगे ।

भगवान् श्रीराम के आशीर्वाद से आपके अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना करता हूँ ।

आपका,

(गणेशी लाल)

श्री अजय भट्ट,
माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री,
रक्षा और पर्यटन,
पर्यटन मंत्रालय,
परिवहन भवन,
संसद मार्ग,
नई दिल्ली –110001

Tel : 91-674-2536111/2536222, Fax : 91-674-2536582, E-mail : govodisha@nic.in, Website : www.rajbhavanodisha.gov.in

मंगुभाई पटेल
MANGUBHAI PATEL

राज भवन
भोपाल-462052
RAJ BHAVAN
BHOPAL-462052

राज्यपाल, मध्यप्रदेश
GOVERNOR OF MADHYA PRADESH

क्रमांक 604 /राजभवन/2021
भोपाल, दिनांक 31 अगस्त, 2021

संदेश

हर्ष का विषय है कि रामायण रिसर्च काउंसिल अयोध्या द्वारा प्रभु श्रीराम मंदिर निर्माण पर गहन शोध आधारित और सबसे अधिक 1,108 पृष्ठों वाली पुस्तक **श्रीरामलला- मन से मंदिर तक** का प्रकाशन किया जा रहा है। हिन्दी और संस्कृत के साथ ही 10 अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में पुस्तक का प्रकाशन सराहनीय पहल है।

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि पुस्तक में अयोध्या की पौराणिक महत्ता, जाने-माने संत, समाजसेवी, श्रीराम मंदिर निर्माण में योगदान देने वाले राजनीतिक, गैर-राजनीतिक दल, इस दिशा में सतत् कार्य करने वाले महानुभावों, व्यक्ति-विशेष तथा प्रभु श्रीराम में अटूट आस्था रखने वालों के आलेखों को संग्रहित किया जा रहा है। रामायण पर रिसर्च एवं उसकी व्यापकता को उजागर कर, प्रभु श्रीराम के मानव-कल्याण संदेशों का प्रसार करने के प्रयासों के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल की पूरी टीम को हार्दिक बधाई।

आशा है, विभिन्न भाषाओं में प्रभु श्रीराम के मानव-कल्याण संदेश और अयोध्या में प्रभु के जन्मस्थान पर भव्य मंदिर के निर्माण से जुड़े तथ्यानुगत जानकारियों का अलग-अलग भाषाओं में प्रकाशन की पहल भारतीय संस्कृति की समन्वयकारिता, आस्था और श्रद्धा भाव को विश्व के पटल पर रखने का सार्थक प्रयास होगा।

शुभकामनाएं।

(मंगुभाई पटेल)

दूरभाष : 0755-2858828, 2858830, फैक्स : 0755-2858832, ई-मेल : mprajbhavan@mp.gov.in

Acharya Devvrat
Governor, Gujarat
Gandhinagar-382021

आचार्य देवव्रत
राज्यपाल, गुजरात
गांधीनगर-३८२०२१

26 AUG 2021

संदेश

आदरणीय श्री अजय भट्ट जी,

रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में श्रीराम मंदिर - अयोध्या संघर्ष पर गहन शोध एवं विभिन्न विषयों को समावेश करनेवाली पुस्तक "श्री रामलला - मन से मंदिर तक" का प्रकाशन किया जा रहा है, यह जानकर अति प्रसन्नता हुई।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि 1108 पृष्ठों की यह पुस्तक हिन्दी भाषा के उपरांत 10 अन्य अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में अनुवादित हो रही है और 21 देशों में इसका विमोचन भी किया जाना है।

इस पुस्तक में अयोध्या की आध्यात्मिक एवं पौराणिक पृष्ठभूमि से लेकर ऐतिहासिक तथ्यों और श्रीराम मंदिर निर्माण तक के विषयों का समावेश किया गया है। इस पुस्तक में विद्वानों, संतों तथा मंदिर निर्माण हेतु अपना योगदान देनेवाले महानुभावों के अनुभवों को भी संकलित किया गया है। मैं आशा करता हूँ कि श्री सीता-रामजी के आदर्श जीवन दर्शन को प्रतिबिम्बित करनेवाली यह पुस्तक पूरे विश्व को मानव-कल्याण के लिए प्रेरित करेगी। इस कार्य में पूर्ण मनोभाव से अपना योगदान देनेवाले रामायण रिसर्च काउंसिल की पूरी टीम के सदस्यों को बधाई देता हूँ और पुस्तक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

(आचार्य देवव्रत)

प्रति,
श्रीमान अजय भट्ट जी,
रक्षा एवं पर्यटन राज्यमंत्री, भारत सरकार,
301, कावेरी एपार्टमेंट, डी. बी. डी. मार्ग,
नई दिल्ली - 110 001

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय श्रीसीतायाः पतये नमः॥
श्री सीतानाथ समारम्भां, श्री रामानन्दाचार्य मध्यमाम। अस्मदाचार्य पर्यन्तां, वन्दे श्री गुरू परम्पराम ।।
आज, श्रीरामलला- मन से मंदिर तक, इस अभिनव पुस्तक के प्रकाशन अवसर पर मेरा मन बहुत प्रसन्न हो रहा है। यह 10 अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में प्रकाशित की जा रही है और 21 देशों में। मैं इस ग्रंथ का प्रेरणा-स्रोत हूं। 1984 से आज तक के संघर्ष में मैं रहा। जो भी उतार-चढ़ाव हुए, सब मैंने देखे। और माननीय इलाहाबाद उच्च न्यालालय की खंडपीठ, लखनऊ ने को मैंने शास्त्रीय साक्ष्य प्रस्तुत किए थे। उन साक्ष्यों की बहुत अहम भूमिका थी। इसलिए, व्यक्तिगत मु ो बहुत प्रसन्नता हो रही है। रामलला तो हमारे मन से मंदिर तक हैं ही, कुछ लोग तो मन को ही मंदिर बना लेते हैं और गोस्वामी जी बार-बार कहा है जिनके मन मंदिर बसो, शीश स्मृत होगा। अभई तो मन से मंदिर तक हो रही है, लेकिन इसका पूर्ण परिणाम तो तब सामने होगा जब मंदिर बनकर प्रस्तुत हो जाएगा, तब यह मंदिर की अनवरतता को प्राप्त करेगा। मैं प्रस्तुत पुस्तक के लेखक / ग्रथनकर्ता, मेरे अत्यंत वात्सल्यभाजन सुशांत को, बहुत-बहुत आशीर्वाद देता हूं और रामायण रिसर्च काउंसिल इसका प्रकाशन कर रही है, इसके लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।
यावत चंद्र दिवाकरौ परशुराम तेजसः

पद्मविभूषित तुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानंदाचार्य
स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी महाराज

आपदामपहतारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो-भूयो नामाम्यहम॥१॥
यह जानकर मु ो अत्यंत प्रसन्नता हुई कि रामायण रिसर्च काउंसिल के द्वारा वृहद ग्रंथराज का प्रकाशन हो रहा है जिसका नाम श्रीरामलला- मन से मंदिर तक, ऐसा होगा। इस ग्रंथ में भगवान श्रीराम के जीवन आदर्श जो कि भारतीय संस्कृति के वो तत्व हैं, उनका और साथ-साथ अयोध्या जी, अयोध्याजी का परिसर, इसके बारे में सारी धार्मिक, सांस्कृतिक जानकारी भी मिलेगी और विशेष बात यह कि भगवान श्रीराम की जन्मभूमि की मुक्ति के लिए जो लगभग पांच शतकों तक संघर्ष हुआ, उस संघर्ष का ऐतिहासिक, संपूर्ण लेखा-जोखा, इसमें उपलब्ध होगा और आधुनिक काल में जो न्यायालयी लड़ाई लड़ी गई, उसका भी विवरण, इसमें प्राप्त होगा। ऐसा लगता है कि यह पूरा ग्रंथ ही एक भगवान श्रीराम के जीवन आदर्श का और राम मंदिर का कोष बनेगा। भगवान रामलला- मन से मंदिर तक, कैसे पहुंचे यह तो हम इसमें से जानेंगे ही, लेकिन श्रीराम मंदिर के निर्माण के साथ-साथ राष्ट्र मंदिर का निर्माण कैसे अपने आप होगा, इसको भी हम अनुभव करेंगे। जिन लोगों ने यह दिव्य प्रकल्प सोचा, उनका मैं अभिनंदन करता हूं और इस महत्त कार्य के लिए मैं अपनी शुभकामनाएं अर्पित करता हुआ, आशा करता हूं कि यह कार्य शीघ्र संपन्न होगा और इससे वर्तमान समाज, सभी प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकेगा और भावी पीढ़ियों के लिए यह प्रेरणा का स्रोत होगा। विद्वानों के लिए यह एक सुंदर ग्रंथ होगा और हम सब के लिए एक मानो दिव्य कोष होगा। हम सभी इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, प्रभु से प्रार्थना है कि यह कार्य शीघ्रता से संपन्न हो जाए। जय जय रघुवीर समर्थ..
भारत माता की जय।

पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज,
कोषाध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट
(अयोध्या)

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेंद्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः
भारत की कल्पना और आम जनमानस के जो नायक हैं, ऐसे मयार्दा पुरुषोत्तम प्रभु राम के ऊपर एक बड़ा ही दिव्य, भव्य ग्रंथ आ रहा है- श्रीरामलला- मन से मंदिर तक, जो कि रामायण रिसर्च काउंसिल की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है। यह ग्रंथ अपने आप में अनुपम है। किसी भी समाज की उन्नति में, यदि सबसे बड़ा मार्गदर्शक कोई होता है, या मार्ग प्रशस्त करने वाला कोई होता है, तो होती है एक ग्रंथ की भूमिका और भगवान श्रीराम का जीवन, आज के समाज में नितांत उपयोगी है। उनके जीवन के जो उच्च आदर्श हैं, यदि आज का मानव उसे अपनाएं तो अपने संपूर्ण संकटों से, संपूर्ण चिंताओं से, अपने सम्पूर्ण अवसाद से वह दूर हो सकता है। यह अद्भुत ग्रंथ है। करीब 10 भाषाओं में और 21 देशों में इसका विमोचन होने जा रहा है। मैं संपूर्ण लेखक मंडल को और जो भी ज्ञात-अज्ञात, इस ग्रंथ के निर्माण से लेकर प्रकाशन की भूमिका में रहे हैं, मैं सबके प्रति शुभकामनाएं व्यक्त करता हूं और प्रभु श्रीराम के चरणों में, यह प्रार्थना करता हूं कि यह ग्रंथ सर्वसुलभ हो और प्रत्येक जनमानस और प्रत्येक नागरिक भारत का, और विश्व का नागरिक इस ग्रंथ के किसी न किसी अंश से प्रेरित हो और अपने जीवन को वह सार्थक बनाएं, यही शुभकामनाएं करते हुए प्रभु श्रीराम के चरणों में प्रणाम करता हूं। जय श्री सीताराम..

आचार्य रामचंद्रदास जी महाराज, उत्तराधिकारी,
तुलसी पीठाधीश्वर, पद्मविभूषित तुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी महाराज

जय सीता राम। जय माई।
परमपिता परमेश्वर की असीम अनुकंपा एवं प्रेरणा से रामायण रिसर्च काउंसिल के माध्यम से श्रीरामलला- मन से मंदिर तक पुस्तक का विमोचन प्रस्तावित है। दस अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में लेखन तथा 21 देशों में इसका प्रसार होना है। पुस्तक के प्रचार-प्रसार में सभी तन-मन-धन से सहभागी बनें। रामायण रिसर्च रिसर्च काउंसिल के सभी पदाधिकारी जिस लगन के साथ कार्य कर रहे हैं, उनको परमात्मा और शक्ति दे एवं जनमानस में जितने भगवद्प्रेमी हैं, वे सभी इसमें तन-मन-धन से सहभागी बनें, इन्हीं अपेक्षाओं के साथ... जय सीता राम, जय माई।

श्री श्री 1008 परम पूज्य परमहंस स्वामी सांदीपेंद्र जी महाराज
माता बगलामुखी मंदिर प्रागण, नलखेड़ा, मध्य प्रदेश

बेहद प्रसन्नता है कि प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष के ऊपर इस ग्रंथ को जल्द ही जनमानस के बीच समर्पित किया जाना है। मैं व्यक्तिगत रूप से शुरू से इस अभियान का हिस्सा रहा हूं। मेरा मानना है कि प्रभु श्रीराम मंदिर 'राष्ट्र मंदिर' है और यह ग्रंथ आने वाले सहस्त्राब्दियों के लिए वर्तमान सदी का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण ग्रंथ बनेगा। मैं अपने प्रिय शिष्य कुमार सुशांत को इस विषय हेतु सतत प्रयत्न के लिए साधुवाद और आशीर्वाद देता हूं। हम सबके प्रयास से इस ग्रंथ के माध्यम से आने वाली पीढ़ी प्रभु श्रीराम मंदिर संघर्ष के लिए सच्ची गाथा के साथ भगवान राम और मां सीताजी के मानव कल्याण संदेशों को जान पाएंगे। 'श्रीभगवती सीताः महाशक्ति साधना' भी मां सीताजी की साधना के लिए एक प्रमुख पुस्तक साबित होगी। आइए, हम सब मिलकर रामायण रिसर्च काउंसिल के प्रयासों को बल प्रदान करें। ऊं नमो नारायण।

परम पूज्य श्री श्री 1008
बाबा कालीदास जी महाराज, सांपला (हरियाणा)

मु ो बहुत खुशी है कि आज हमको एक पुस्तक रामायण रिसर्च काउंसिल के द्वारा लिखा गया श्री राम लाल मानस मंदिर तक एक प्रतिलिपि हमें मिली है। मैं इस पुस्तक को पढ़ने में ये पाया की मन से मंदिर तक ये जो मन में आया जो ऐसे मंदिर का निर्माण हो उसके एक रूपरेखा इस किताब में दी गई है। राम एक ऐसा वर्ड है जो हिन्दुओ के लिए एक बहुत पवित्र चीज है जहाँ भी हो हम राम की बात करते है लेकिन राम लाल की अस्तित्व पर जब चोट पहुंचा, बहुत से प्रॉब्लम सालो साल तक रामलला के लिए लड़ते रहे और इस किताब में एक-एक लड़ने का कोर्ट केस मैं जो भी चीजे हुआ सबको लिखा गया है ताकि आगे आने वाले दिनों में कोई वेस्टर्न मीडिया अदर्श जो किसी तरह का भेदभाव करना चाहेंगे तो डॉक्युमेंट्री एविडेंस के रूप मे ये किताब सावित होगा। जहां तक मैं दोस्तों से यह कहना चाहूंगा की रामायण हो या रामलाल मन से मंदिर की किताब हो या श्रीराम जन्मभूमि मंदिर जो आज बन रहा है तब तक यह धरोहर के रूप में रहेगा मैं इस रामायण रिसर्च काउंसिल की जो जितने भी पार्ट ऑफ बॉडी है बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं इस तरह की विशाल किताब डॉक्युमेंट्री एविडेंस रूप में रामलला मंदिर मंदिर के रूप में लाया है इनके लिए साधुवाद देता हूं और मैं सम ाता हूं कि आगे आने वाली दिनों के लिए एक किताब बहुत बड़ी धरोहर के रूप में रहेगी धन्यवाद।

डॉक्टर आरएन सिंह,
राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिंदू परिषद

माननीय प्रधानमंत्री जी से हमने मुलाकात की, उनको किताब (डमी कॉपी) दिखाया। उन्होंने कहा कि इसको सारी लाइब्रेरीज में हो ..हमारा पहले ये था कि 10 भाषाओ में और 21 देशों में करेंगे लेकिन तब से अभी इसकी ट्रांसलेशन हो रही है हम लगे हुए हैं पहले हिंदी से अंग्रेजी, फिर हम एक-एक चीज में करेंगे पहले अपनी भाषाओं में चाहे मलयाली हो कन्नड़ हो तेलुगु हो जितनी हमारी बांग्ला हो हमने सोचा है यह करके फिर विदेशों में जितनी भी भाषा है उन भाषाओं में इसको आगे के लिए पूरे विश्व के सामने एक तथ्य रखेंगे की जो हमारा देश है प्रभु का देश है राम जी का देश है कैसे हुआ क्या हुआ मयार्दा पुरुषोत्तम ने जो मर्याद सिखाई है वो विश्ववर्धित हमारा है, हमारा यह मानना है कि ये हमलोग जो पुस्तक को इस समय समर्पित करेंगे 10 भाषाओं में करेंगे अपने देश में करेंगे पूरे राम भक्तों के विश्व में जाएगी और 21 देशों में लॉन्चिंग करेंगे तो वो एक बहुत बड़ा काम होगा जैसे-जैसे मंदिर भी आगे को बढ़ेगा उसी के साथ हम लोग का विचार और सत्यता जो सत्य बातें हुई है एक एक चीज की इतिहास लिखा हुआ है जो सत्यता की कसौटी पर खरा उतरता है...

श्री अजय भट्ट जी, रक्षा एवं पर्यटन राज्य मंत्री,
भारत सरकार एवं मा. सांसद, नैनीताल-उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड
(मा. अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ ट्रस्टी, रामायण रिसर्च काउंसिल)